# सीयूजे में अंतराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस आयोजित

राष्ट्रीय सागर संवाददाता

**रांची :** भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के दिशा निर्देश पर उन्नत भारत अभियान के तहत सोमवार को झारखण्ड केंद्रीय विश्विद्यालय में अंतराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का आयोजन किया गया और दो विशिष्ट ब्याख्यान के साथ मातृभाषा से सम्बंधित कई कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ डॉ. देबेन्द्र बिस्वाल के स्वागत भाषण से हुआ। इस समारोह में जो सबसे सराहनीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया वो था भारतीय संविधान के प्रस्तावना को कई क्षेत्रीय भाषा में पाठ। विश्वविद्यालय के सह प्राध्यापक शशि कुमार मिश्रा एवं डॉ. कुंचोक ताशी ने अग्रणी भूमिका निभाते हुए हिंदी तेलगु लद्दाखी इत्यादि भाषाओ में संविधान की प्रस्तावना का पाठ करवाया और साथ ही साथ झारखण्ड के प्रत्येक भाषाओं में खास कर आदिवासी भाषाओं में प्रस्तावना के अनुवाद पर जोर दिया। बहुत जल्द ही केंद्र सरकार को भारत के सभी १३६ ९ मातृभाषाओं में भारतीय संविधान को उपलब्ध कराने वाली एक प्रोजेक्ट प्रोपोजल देने का निर्णय लिया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य भाषण हैदराबाद विश्वविद्यालय के भूतपूर्व प्राध्यापक एवं प्रख्यात भाषा वैज्ञानिक प्रो. पंचानन मोहंती एवं दक्षिण कोरिया के हंगूक यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज के प्रो. कोतेजिन ने दिया। प्रो. पंचानन मोहंती ने भारत के भाषाई विविधता के एवं प्रारम्भिक शिक्षा को मातृभाषा में देने के ऊपर अपना विचार रखा। साथ ही साथ उन्हें शिक्षा निति बनाने वालों को यह भी ध्यान दिलाया की क्या हमारे पास इतनी सुविधा है की भारत में बोली जाने वाली सभी मातृभाषों में शिक्षा दिया जा सके। उन्होंने नयी शिक्षा के ऊपर विचार रखते हुए केंद्र सरकार की सराहना करते हुए कहा कि देश केंद्र सरकार का आभारी है कि उसने नयी शिक्षा निति में मातृ भाषा को आगे बढ़ाने का सराहनीय कार्य किया है। प्रो. को ते जिन ने ग्लोबल पर्सपेक्टिव एजुकेशन इन मदर टंग के ऊपर अपने विचार रखते हुए कहा कि मातृ भाषा में प्रारम्भिक शिक्षा के बिना मानव अपनी संस्कृति, अपनी स्मिता और अपनी पहचान को बनाये नहीं रख सकता है। व्यक्ति के एक सर्वांगीण विकास के लिए मातृभाषा के साथ आगे बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने नेल्सन मंडेला के एक वाक्य को उद्धृत करते हुए कहा की जब आप किसी व्यक्ति से भाषा में बात करते है तो वह उसके दिमाग में जाता है लेकिन जब आप उस व्यक्ति से उसकी मातृभाषा में बात करते हैं तो वह उसके दिल को छू जाता है। इन दो विशिष्ठ वक्ताओं के अलावा झारखण्ड केंद्रीय विश्वविद्यालय प्रो. रतन कुमार डे ने विश्वविद्यालय के कुलपति का सन्देश पढ़ा और साथ ही साथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. हरिकुमार , डीन अकादमिक अफेयर्स प्रो. मनोज कुमार एवं डीन स्कूल ऑफ लैंग्वेजेज प्रो. रत्नेश विष्वक्सेन ने भी अपना विचार रखा।